प्लेग के लिए जेरबिल्स और रेशम मार्ग दोषी

ज़्यादातर लोग सामान्य चूहों की अपेक्षा जेरबिल्स (रेगिस्तानी चूहा) को ज़्यादा पसंद करते हैं। मगर चूहे उतने भी बुरे नहीं होते। संभावना यह है कि युरोप में 1347 में प्लेग के प्रकोप के लिए चूहे नहीं बल्कि मध्य एशिया के कृन्तक ज़िम्मेदार थे। अगली चार सदियों तक प्लेग का प्रकोप जारी रहा और इसने लाखों लोगों की जान ली थी।

प्लेग *यरसिनिया पेस्टिस* नामक बैक्टीरिया के कारण होता है। इस बैक्टीरिया के वाहक पिस्सू होते हैं और यह बैक्टीरिया प्रायः कुतरने वाले जीवों को प्रभावित करता है। प्लेग ने युरोप को कई बार प्रभावित किया है। ऐसा माना जाता है कि युरोप में प्लेग एशिया से रेशम मार्ग के ज़रिए पहुंचा था। इसके बाद बार-बार प्लेग प्रकोप का कारण यह माना जाता है कि यह चूहों में छिपे बैठे बैक्टीरिया संक्रमित पिस्सुओं के द्वारा फैलता रहा।

लेकिन युनिवर्सिटी ऑफ ओस्लो, नार्वे के निल्स क्रिस्टियन स्टेनसेट और उनके साथियों का कहना है कि चूहों को दोष देना गलत है। उनके मुताबिक प्लेग के लिए ज़िम्मेदार तो मध्य एशिया के कृन्तक हैं। इस टीम ने 4119 ऐतिहासिक रिकार्डों का विश्लेषण किया जहां प्लेग फैला था। उन्होंने पाया कि इन महामारियों का कारण उन जगहों के आसपास फैली महामारी थी। लेकिन वे यह भी पहचान पाए थे कि 61 महामारियां 17 बंदरगाह क्षेत्रों में फैली थीं जिसमें लंदन, हैम्बर्ग, बार्सिलोना और डूबरोवनिक शामिल थे। इन जगहों पर प्लेग का कारण संभवतः एशिया से समुद्री मार्ग द्वारा सामान का आयात था।

ऐतिहासिक रिकार्डस में स्टेनसेट और उनके साथी सन 1346 से 1837 के बीच के 16 ऐसे वर्ष पहचान पाए जब नया प्लेग आसपास की किसी महामारी की वजह से नहीं बल्कि नए बैक्टीरिया की वजह से फैला होगा।

जब उन्होंने इन महामारियों का मिलान उन वर्षों में वृक्ष वलय आंकड़ों से किया तो स्पष्ट था कि युरोप के जलवायु पैटर्न के साथ इन महामारियों का कोई सम्बंध नहीं था। देखने में आया कि हर बार युरोप में प्लेग की महामारी से 15 वर्ष पहले एशिया के मौसम में बदलाव हुआ था - उच्च तापमान के बाद तापमान में अचानक गिरावट। दूसरे शब्दों में, कहा जा सकता है कि हर बार युरोप में प्लेग का नया प्रकोप यूरोप के चूहों से नहीं बल्कि एशियाई कृन्तकों से फैला था।

गर्म मौसम में पिस्सुओं की सक्रियता और बैक्टीरिया को अन्य पिस्सुओं में फैलाने की दक्षता दोनों बढ़ जाती हैं। स्टेनसेट का कहना है कि अध्ययनों में देखा गया है कि तापमान 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ने से मध्य एशिया के जंगली कृन्तकों में प्लेग का प्रकोप दुगना हो जाता है।

ऐसी स्थिति में पिस्सू ही नहीं बल्कि उनको ढोने वाले जेरबिल्स और मार्मोट्स की संख्या भी बढ़ जाती है। इसके बाद जब तापमान अचानक कम होता है तो कृन्तकों की संख्या में गिरावट आती है और पिस्सू नया मेज़बान ढूंढने को मजबूर हो जाते हैं।

युरोप में प्लेग के प्रकोप की उक्त व्याख्या से कई घटनाएं समझ में आने लगती हैं। जैसे नॉर्वे में प्लेग का फैलना जहां उस समय चूहों की आबादी बहुत अधिक नहीं थी। इस व्याख्या से यह भी समझने की कोशिश हो रही है कि बदलती जलवायु के साथ प्लेग जैसी बीमारियों की तस्वीर कैसे बदलेगी। ***(स्रोत फीचर्स)***

2014 के स्रोत सजिल्द का ऑर्डर करें

मूल्य 200 रुपए (25 रुपए डाक खर्च)